अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस 18 मई

डीग भवन संग्रहालय, डीग

संग्रहालय

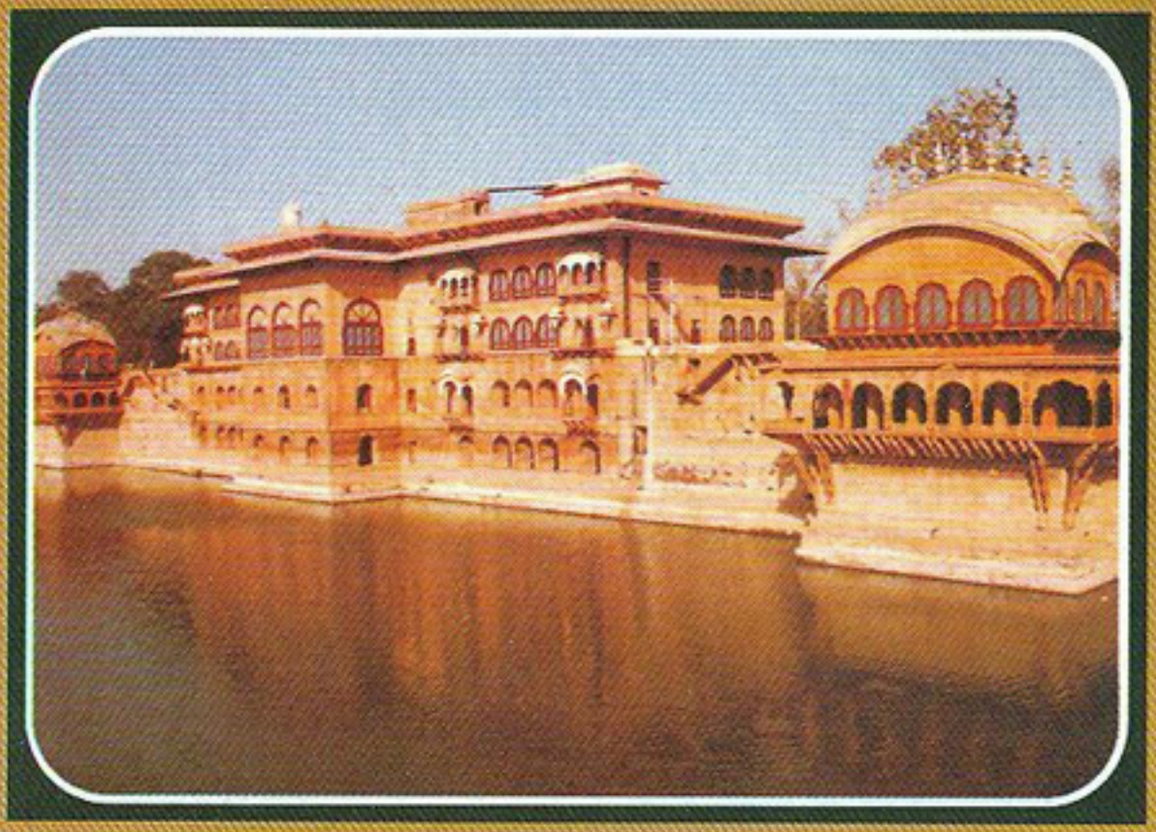

* सांस्कृतिक धरोहर के कोष *
* परम्पराओं का दर्पण *
* अतीत के पोषक *
* भविष्य के मार्गदर्शक *
* ज्ञान के अभिनव स्थल *

2010

अधीक्षण पुरातत्वविद्

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

''कैलाश'' मानसरोवर 70/133-140, पटेल मार्ग

जयपुर मण्डल, जयपुर

फोन : 0141-2396523, 2784533, 2784534

डीग भवन संग्रहालय, डीग

भरतपुर जिले में स्थित डीग 18वीं–19वीं शताब्दी में जाट शासकों की सत्ता का केन्द्र था। डीग के राज भवनों का निर्माण महाराजा सूरजमल एवं उनके पुत्र जवाहर सिंह द्वारा करवाया गया। दो मुख्य सरोवरों गोपाल सागर एवं रूप सागर के बीच स्थित भवनों के ये समूह स्थानीय स्तर पर जलमहल के नाम से प्रसिद्ध हैं। हल्के गुलाबी रंग के बलुआ पत्थर से निर्मित इन भवनों की स्थापत्य कला में प्रायः जाट स्थापत्य एवं राजपूताना शैली के कई तत्वों का सम्मिश्रण मौजूद है। इन्हें क्रमशः गोपाल भवन सह सावन एवं भादो मंडप, सूरज भवन, हरदेव भवन, किशन भवन, केशव भवन तथा नन्द भवन के नाम से जाना जाता है। व्यापक पैमाने पर फव्वारों का प्रयोग डीग के जलमहलों की अद्वितीय विशिष्टता है। महलों में प्रवेश हेतु तीन द्वार हैं जिनमें सिंह पोल प्रमुख है।

उल्लेखनीय है कि गोपाल भवन एवं किशन भवन में एक संग्रहालय का विकास किया गया हैं जिसमें जाट शासकों द्वारा उपयोग की गई तत्कालीन वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है। वर्तमान में इन भवनों में प्रदर्शित सामग्रियों की संख्या पाँच सौ सैंतालीस है।

गोपाल भवन :–

यह भवन जाट शासकों का मुख्य निवास था। इस भवन में उन शासकों द्वारा प्रयुक्त वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है। भवन के विभिन्न कक्षों यथा – महाराजा अतिथि कक्ष,

महाराजा एवं महारानी का शयन कक्ष, भारतीय व पाश्चात्य शैली में निर्मित भोजनालय, शतरंज कक्ष, सचिव कक्ष, नृत्य कक्ष, तथा मानसिंह कक्ष में विभिन्न पारंपरिक घरेलु तथा सजावटी वस्तुओं को यथास्थान दर्शाया गया है।

महाराजा अतिथि कक्ष –

इस विशालकाय आयताकार कक्ष का उपयोग तत्कालीन शासक राजकीय अतिथियों के स्वागत कक्ष के रूप में किया करते थे। प्रदर्शित अवशेषों में मौलिक ईरानी कालीन, विभिन्न प्रकार के फर्नीचर, पहियेदार सोफे, सजावटी पुष्पगुच्छ, एक बाघिन की प्रतिकृति, हाथी के पैर को खोखला कर बनाया गया इत्रदान, सुनहरी चित्रकारी युक्त पोर्सिलीन के फूलदान, लकड़ी एंव कपड़े से बने लंबे झालरदार पंखे, महाराज किशन सिंह एंव अंतिम महाराजा वृजेन्द्र सिंह की तस्वीरें, डीग एंव भरतपुर के विभिन्न महलों के पुराने रेखाचित्र एंव संगमरमर का बना सुन्दर फव्वारा प्रमुख आकर्षण हैं जिनसे इस कक्ष की भव्यता काफी बढ़ जाती है।

भारतीय शैली का भोजनालय–

स्वागत कक्ष के ठीक पीछे प्रथम तल पर एक कक्ष है जिसमें अण्डाकार आकृति का एक पीठ संगमरमर से निर्मित है। इस पीठ का प्रयोग राजकीय व्यक्तियों द्वारा पालथी लगाकर भोजन करने हेतु किया जाता था। इस कक्ष की छत से एक सुंदर झाड़–फानूस लटक रहा है। इस कमरे की दीवारें

रंगीन है जिनपर कतिपय पक्षियों एवं ज्यामितिक अभिप्रायों का चित्रण विद्यमान हैं।

पाश्चात्य शैली का भोजनालय

इस आयताकार कक्ष में एक लंबे आयताकार मेज के चतुर्दिक 18 से 20 कुर्सियॉ व्यविस्थित हैं, जिनपर बैठकर राजकीय व्यक्ति या पाश्चात्य अतिथि भोजन किया करते थे। गर्मी के दिनों मे गोपाल सागर से चलती शीतल पवन इस कक्ष को पूर्णतः शीतलता प्रदान करती थी। इस कक्ष में छोटे छोटे बलुआ पत्थर के फव्वारे लगे हैं। इसके अतिरिक्त कक्ष में कतिपय तंजौर शैली के अनुरूप बनाए गये चित्र भी प्रदर्शित हैं।

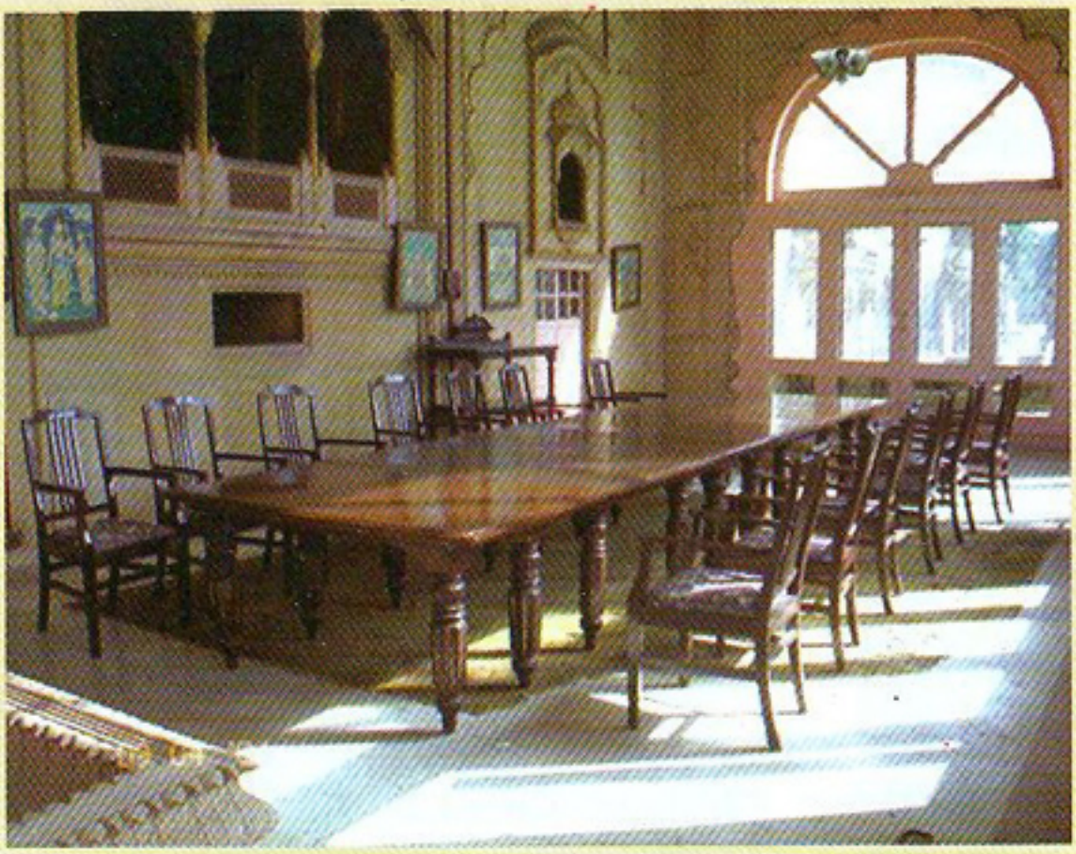

महाराजा शयन कक्ष

तीन भागों में बंटे इस कक्ष के मध्य भाग का उपयोग राजा शयन कक्ष के रूप में करते थे। आयताकार कक्ष के मध्य में लगभग 12 फीट लम्बा एवं 8 फीट चौड़ा पलंग है। पलंग निवाड़ से बना हुआ कम ऊँचाई का है जिसके पाये चांदी के कलापूर्ण पत्तरों से आवेष्टित है।

शयन कक्ष के दक्षिणी हिस्से का उपयोग राजा द्वारा रूप–सज्जा के लिए किया जाता था। इसी कक्ष के साथ स्नान गृह तथा शौचालय भी है। शयन कक्ष में सीप की बनी कतिपय लघु कलाकृतियॉ तथा कतिपय देवी देवताओं के छायाचित्र

लगे हैं। इस कक्ष में पुराने फर्नीचरों के साथ साथ कुछ आधुनिक फर्नीचर भी प्रदर्शित हैं।

शतरंज कक्ष–

संभवतः इस आयताकार कक्ष का प्रयोग जाट शासक शतरंज खेलने हेतु किया करते थे परन्तु खेल के अतिरिक्त विश्राम करने हेतु प्रयोग मे लाए गये मसनद, आरामदेय तकिए व गद्दों को भी यथा स्थान प्रदर्शित किया गया है। शयन कक्ष के बिल्कुल निकट होने से यह भी सम्भावना है कि यह कक्ष अतिविशिष्ट लोगों के बैठक हेतु प्रयोग किया जाता रहा होगा।

काष्ठ निर्मित कूलर–

मानसिंह कक्ष के दक्षिण पूर्व में स्थित एक लघुकक्ष में लकड़ी का बना एक कूलर प्रदर्शित है। यह पट्टा व पुली के माध्यम से हाथ द्वारा चलाने वाला कूलर था, जिसे मूलतः नन्द भवन में सार्वजनिक समारोहों के अवसर पर प्रयोग किया जाता था। कूलर के दोनो किनारों पर लकड़ी के हुक लगे हुए है जिनमें ग्रीष्म काल में खस की जालियाँ लगा दी जाती थी और जिन्हे पानी से गीला करने पर यह कूलर ठंडी व सुगन्धित हवा देता था।

किशन भवन –

वास्तु शिल्प में गोपाल भवन के सदृश इस भवन का आन्तरिक भाग मेहराब एंव अरबस्क शैली के अलकंरण से सुसज्जित हैं। इस विशाल कक्ष का उपयोग सभा कक्ष के रूप में किया जाता था। कक्ष की दक्षिणी दीवार से झांकती एक दीर्घा है, जिसका आगे का भाग अलंकृत है। यह स्थान राजा द्वारा सभा संचालन के लिए प्रयुक्त किया जाता था। इस विशाल कक्ष में सोफे एंव काउच लगे हुए है, जो अन्य दरबारियों के बैठने हेतु प्रयोग में आती होंगी। लकड़ी के बने सजावटी मेजों, धातु के फूलदानों, बाघ शावकों की प्रतिकृतियों, ईरानी कालीन तथा छत से लटकते रंगबिरंगे प्रकाश परावर्तक इस भवन के अन्य मुख्य आकर्षण है।

चित्र दीर्घा

किशन भवन से संलग्न एक अन्य कक्ष में भरतपुर के जाट शासकों के व्यक्ति चित्र काल– क्रमानुसार प्रदर्शित किये गये है, जिससे दर्शकों को शासकों की जानकारी के साथ–साथ तत्कालीन राजकीय वेशभुषा का भी भान होता है

सामान्य सूचना

- स्मारक सह संग्रहालय प्रवेश शुल्क 5/– प्रति व्यस्क
- 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों तथा परिसर में स्थित हनुमान मंदिर में जाने वाले श्रद्धालुओं हेतु प्रवेश निःशुल्क है।
- संग्रहालय प्रतिदिन खुला रहता है।
- संग्रहालय समय – 8 बजे पूर्वाह्न से 5 बजे अपराह्न तक।

सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
डीग भवन संग्रहालय
डीग, जिला भरतपुर (राज.), फोन 05641-280424